नं० ४८६३ – घ

शिवकांडे पंचदशयन्त्रमाहात्म्यम्

पत्राणि ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० ४७६३-घ

पंचदशाध्यायत्रमाहात्म्यम् शिवकाण्डे

नं० ४७६३-घ

पत्राणि ५ (पांच)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पं॰ द॰ यंत्र॰
१

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ॐ ५ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ श्रीं | ७ |
| ४ | ९ | २ |

नमः स्वयंभेवषट्वश्ये वोषडा
कर्षणे विदुः ॥ स्वाहा पुष्टौ ह
या पातो हेवेषमारणेनथा १
हुं हे षेफटौ चाटे मुष्टौ ने पल्ल
वाःस्मृताः पल्लवेन विना मंत्र
यंत्रं च निष्फलं भवेत् ॥ ॐ ह
ह्रां नमो नारायणाय स्वाहा ॥
जप १०००० सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं
ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ चारो पांच वें अंक
गिर्दे लिखे ॥ ॐ यंत्राय विद्महे महायंत्राय धीमहि तन्नो यं
त्रः प्रचोदयात् ॥ इति यंत्रगायत्री जपवी सांप्रदा यंत्र के मंत्र ॥
का ॥ ॐ ह्रीं श्रीं हरः ॥ इति सर्वोपरि मंत्रः श्रु० ह्रीं ध क्ली
ली ही का क्री मो श्री ॥ ॐ श्री भगवत्यै नमः अथ पञ्च
दशामहायंत्रराजस्य माहात्म्यं लिख्यते ॥ दोहा शंकर जू कै
लास मे एकसमे ते विराज श्री गिरिजा जू संग है अति प्रसन्न
महाराज १ नमस्कार प्रार्थना करी गिरिजा जी सुख नाई वि
धी पंचदशा यंत्र की कहो फोचा होतो ना हि २ शंकर उवाच भगव
ति पंचदश की विधी सुन ध्यान चित लगाई प्रथम स्नम ल छुड़
ने स्नान करै सब नाईं ३ शुभ दिन शुभ नक्षत्र मे भूर्जपत्र के

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाउ अथवा काकदपचलिखि पविधिवैदेवनाउ एकाहू ॥
जातीसबो चौथापाचाहोइ छठासातवा आठवा नवमअ
कहैंजोइ ॥५ इनसोंहूरयपयंत्रकोंचतुरकोनवकोठ ॥ न
वेनवलदाचटत्रपेइहमंत्रइककोठ ६ ॐ हुविं धीं हु
र: ॥ इतिमंत्रयंत्रकोजानलक्षभयपुनियेत्रकोपहविधि
हंपहिचान ७ एकाहारीहविषभषिभूषाईनवहोइ
ब्रह्मचर्यसंयुक्तजबहोइतनवालिखिपीकोइ ८ रक्तासन
रक्ताहिपटकुंरक्तमालकोधारि कुंभस्थापनकरिनहोदी
पकसम्हरवधारि ९ प्रथमगणेशपाहिपूजकेयत्रपूजे
चितलाइ अष्टमूर्तिभगवतीकीपूजाकरेचनाइ १०॥
घतस्त्रोक्तनवपूजकेवंदीमोचनहोत अलताडारिसभू
मिपरअयुतलिखिफलदेत ११ द्राडिमकलमबनाइके
इहविधिलिखिजुकोइ पीतुकालनाकोसनोवंदीमोच
नहोइ १२ मिलाकाष्टमहरानि करीचंदनलेपसंयुक्त
चित्रजकाकदपेलिखीप्रतिमास्वर्णकीउना १॥ और
मनोमयज्ञानियेइकस्टानिकाकीगंनि रत्नमनिनकीसहित
हरिप्रतिमाघटरनसंति २॥ ॥० ॥००००००००४०

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पं: ब
यं: २

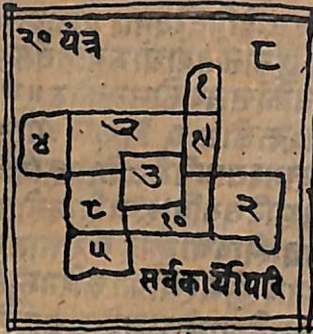


श्रुलक्षपत्रविर्वृभूर्जपत्रपि
लिखिं अष्टगंधसेस्तगंधप्र
ततउसनेपूजाकरे अथ
अष्टगंध। चंदन १। अग
र २। कस्तूरी ३। लाक्षा
४। कर्पूर ५। कुंकम ६
देवदार ७। यंत्र १०८ मंत्र
१००० जपेहवनदशांशाक
रे मंत्रः ह्रीं क्लीम
मसर्ववांछितंदेहिदेहिस्वास्वाहा १॥
ॐश्रीभगवत्यैनमः॥ ॐगंगंगायगणपतिगेविघ्नवि
नाशायैस्वाहा॥ दिन ११ जपेसंख्या ११०० मंत्रश्री
श्रीतुलसीकेचबूतरेपेजपेसंख्या १०००० ॐ ई ऐं
नमः ॐ ई क्लीं नमः। जोचाहेसोइ॥ पंचदशायं
त्रविधिआदमंत्रसुंदरीजी १२५००० जपेहृआल
मालातेदशांशाहवनकरे मंत्रः॥ ॐ ह्रौं श्रीं ह्रीं फ
ट्स्वाहा॥॥ युगलअयुतालीविराजगतिआग्निरो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इसोजान ॥ तीनअयुतलिखेयरामेविजयपावैपाडिवान
१३। स्थापानग्रहकोलिखिवेदअयुतजोकोइ। षटअयुत
हिनिर्हीजेजोमहारोगकीहोइ १४। सप्तअयुतनेतेलक्ष्मी
पतिकीतुलनापाइ। अष्टअयुतदायकसप्तअष्टसिद्ध
केजाइ १५ सप्ततालेनवनाथकीनवअयुतजोकीन।
दशाअयुतजोजनकरेममसमहोइप्रवीन १६ ॥ द्वितीय
प्रकार: मृगमदगोरोचनजुलेकेसरमाहिमिलाय स
नअर्थकेहेतजोकोऊलिखिवेबनाइ १७। अरिकोंडरवे
केहेतलिखकनकसारकोलाइ। मोहनार्थसभलो
ककेनितदसबारालिखाइ १८ ॥ आकर्षणहेतनितहि
२ दशाभयेपयंत्र ॥ २५०॥ कीर्तिहेतुहंजानलेमीसलिखिसमनं
त्र १९ ॥ चालीसंवातततनितालिखिअयुतप्रयोगमाहिसाथ
जोजोचाहेसोकरेति। रुचेचित्तमेवांथ २० ॥ अर्कवार
कोंआककेडगांयेंयंत्रभरेज्ञु। भस्मसतानरलाइकेचित्तमे
ताहिथरैज्ञु २१॥ अविकुमामसंयुक्तलिखजेडारेचित्तमाहि
इहमातमंत्रमयमपढैअरिविद्वेषहोइमांहि २२॥ सोस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पं. ६. यं. ३

दिवसशीतरर्वागुंजासेतन्त्रसाइ अरुकापेलासीरमे
केसरसंगामिलाइ २३ ॥ भूर्जपत्रपैलिखिजवयकंठे।
बाकुबांधि भूपतिवशहोवेसदानिश्चयकुकेसाधि २४
भौम — काकपक्षकलमजोकाकरकसोलिखे मृ
तकवस्त्रपेयंत्रलिखिअरुअरिनामविशेष २५ ॥ जा
केघावेगाडिदेलांघनहोइनिदान । ताकोनिश्चयजा
नियेउच्चाटनपरमान २६ ॥ बुधवासरगोरोचनहि
केसरसोंलिखिजाइ काकपंपैलिखिकेतिसेवातीप
कवनाइ २७ ॥ नरकपालमेवातियेसरसोंतेलभरना
ई दीपकवालकपालमेकाजललेउवनाइ २८ ॥ का
जललेइकेपालतेंवाकोंआंजैजोइ नरनारीजेदेखिहै
मोहनसभकोहोइ २९ ॥ गुरुवासरगोरोचनहितगर
हरिद्रालेहि अस्थिहुनसोंलिखियंत्रकोहितनामस
हितदेहि ३० ॥ रात्रेश्मासनलपढेमंत्रवाहितकोथान
आकर्षणतनकालहैएजानोपरमान ३१ ॥ भृगुदि
नलेवेचर्चकोंकुंकुमऔरकपूर मधुसेंपावैधियंत्रकों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भूर्जपत्रपै रख ३२॥ सीसकंठभुजथारिजिह्नानामहिप
रहोइ सोवामावश्यहोइहै लिखोयंत्रमैजोइ ३३॥ प्रा
णादुष्टअरपणकरै चित्तलेगा वेतालह होइवशीआउंडि
चलीआवेताकेपास ३४॥ वारप्राणिआरकाष्टालेहि वि
ताकीजाइस्मृतवस्त्रपैजो लिखेकुर्कटरक्तमंगाइ ३५॥
नामअरीसोंयंत्रकोंडलाटोभेरैजो कोइ तवगाडैजुम॥
सानमैवैरीनाशाहोइ ३६॥ अल्पदिनमभेकोपवंतय
हयंत्रकदापिनहीदेनो द्वितीयविधि । स्यामंचतुरदश्या
कीकैआवंभवटकेहेठ अयुतमैयायंत्रकोंकरेनक
कुम्बलहैट ३७॥ नागपाकीकलमसौंचारपदार्थ
प्राप्तिहोइ ब्रह्महूलकीकलमतेतनपातभेरजुकोइ नि
श्चयजानोहेप्रियेदारिद्रसहानीहोइ ३८॥ पीपलमू
लाहिवैठिकेलिखेसहस्त्रवनाइ गोमूतमनाशीलय
हतगरलेहिकसूरलाइ ३९॥ भूर्जपत्रपरलिखेजो
कार्यचाहेसोहोइ विपुलभोगप्राक्तमविल्वपत्ररसावि
ल्वशाखाकलमसोंअभस्थाने एकांतभूबेठभूर्जप
त्रपेजुगसहस्रलिखेवाचासिद्धिहोवेसही अर्कपत्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यं-द-यं-
५

रतग्रर्कपत्रपैमंडितकरयविष्णुकेनामसंगश्रुपोत्तरपात
यंत्रभरैकिकरैसवाधेतोविष्णुकोंस्फ्रनतापडुःखप्राप्ति
होइसरूो हरिद्राजलसोंहुतेयपमणिपैरभरै हरिद्वार
गाडैतरुणानितप्रतिकलहृहोवे ॥ शुद्टकंठैकोरसका
ढैभूर्जपत्रपैलिखिधूपदेगलवांधेनीयाचौथापका
नापनाशै मंगलवारसलयभूर्जदलतापैलिखकेयाव
कंठमांहिपावेविजैवादविवेनरनार ४०॥ लक्षयंत्रक
रिमंत्रसोंहोमकरैदशांश्श मिसरीमालीहीउलेसरसों
लेयनिरतंस ४१॥ जोजोचाहैहोयसोयातेनिश्चयजा
न गुह्यवारताहैोकहीप्राणप्रियामनमानु ४२॥ गो
रोचनकुंकुमअगरभूर्जपत्रदललेइ धूपदीपनैवेद्यदु
निलिखकेताकोदेइ ४३॥ पुष्पचढावेयंत्रकोजलदे
हिप्रवाह स्वमविवेनिसशत्रुनमेहमतममजोंनिंदपाहि
४४॥ सकलकामनासिद्धहोवेजवनमुकज्जहोवे प्र
भवरदायकहोंइगोहमतमवाकोजोइ ४५॥ जवआ
वेकालाष्टमीनवतवजेवलिदेहि वीरदेवदत्तयंत्रकोंता
केवसीरदेहि ४६॥ कुमयडदरदतिलपारकवाहूनसों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लेइमिलाइ बलीवीरको देईये वासिवुहरसेवनाइ ४७॥ हे
गिरिजेतुवमलको सोसभदियो वनाइ ग्रथितिकारीमीतसोसों
सबदियोवनाइ ग्रथिकतिकारीमीतसोंसोंसवदियोवनाइ ४८॥
दमयनलीसनाउनाडुष्टकुटिलजो सोइ दुर्लभसरनदेवनाय
विपिसबको जोइ ४९॥ कीलकसबको सोगयो कलयुग
युगके मांहि दयतुमको यायंत्रको वाको कील्यो नांहि ५०
तवसत्ताको यंत्र ये हि निश्चय जानो नाहि याखो गुह्यपरम
गुह्यको ऊज्ञानयनाहि ५१॥ इतिश्रीपंचदशायंत्रमाहात्म्य
शिवकांडे समाप्तिमगात् ॥०००००००००००००००

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri